प्राचीन संस्कृत साहित्य

सुदर्शन गोयल
व्याख्याता, संस्कृत, श्रीमती कमला देवी गौरीदत्त
मित्तल महिला महाविद्यालय सरदारशहर

प्रत्येक भाषा एक सांस्कृतिक इकाई की उपज होती है, किंतु कालांतर में प्रत्येक भाषा अपनी एक अलग संस्कृति का निर्माण करती हुई चलती है।
भाषा और संस्कृति राज्य और सभ्यताओं की तरह जड़ और मरणशील नहीं होती।
भारत की साहित्यिक परंपरा 4000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है और इस दौरान संस्कृत की प्रधानता थी- पहले वैदिक और बाद में शास्त्रीय रूप में।
आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का उदय 1000 ई. सन् के बाद हुआ, जब क्षेत्रीय भाषाओं का विभाजन एक निश्चित स्वरूप अख्तियार कर रहा था। यही स्वरूप आज भी विद्यमान है। इन भाषाओं का समूह उत्तर भारत से मध्य भारत तक पैला है।
द्रविड़ भाषाओं में तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम हैं जिनमें साहित्यिक विधा के लिये सबसे पहले तमिल का विकास हुआ। विद्वानों के अनुसार द्रविड़ भाषाएँ भारतीय-आर्य भाषाओं से पहले अस्तित्व में आईं।

•**वैदिक साहित्य:** वैदिक ग्रंथ मूलत: मौखिक थे व संस्कृत भाषा में रचे गए। काफी समय तक श्रुति परंपरा में रहने के पश्चात् इन्हें कलमबद्ध किया गया है।
•वैदिक ग्रंथ के अधीन चार वेद, आठ ब्राह्मण, छह अरण्यक और तेरह प्रारंभिक उपनिषद आते हैं।
•चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे प्राचीन है तथा अथर्ववेद सबसे नवीन है।
•ऋग्वेद मंत्रों का संकलन है जिसे यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिये ऋषियों द्वारा संगृहीत किया गया था। ऋग्वेद के कुल मंत्रों की संख्या 10 हज़ार से अधिक है।
•यजुर्वेद ऐसे मंत्रों का संग्रह है जिनसे पुरोहित द्वारा यज्ञ विधि को संपन्न कराया जाता था।
•कर्मकांड प्रधान यजुर्वेद को मंत्रों की प्रकृति के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जाता है- शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद।
•कृष्ण यजुर्वेद में छंदबद्ध मंत्र तथा गद्यात्मक वाक्यों का संग्रह है, जबकि शुक्ल यजुर्वेद में केवल मंत्र ही हैं।

•सामवेद, ऋग्वेद से लिये गए एक खास प्रकार के स्तुति पद्यों का संग्रह मात्र है जिसे लय में ढाल दिया गया है।
•अंतिम वेद अथर्ववेद है जिसमें लौकिक फल देने वाले कर्मकांड तथा जादू-टोना-टोटका और इंद्र मायाजाल से संबंधित मंत्रों की उपस्थिति है।
अथर्ववेद की रचना (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) आर्य तथा आर्येत्तर तत्त्वों के सम्मिलन के दौरान हुई है।
•ब्राह्मण ग्रंथ सुव्यवस्थित गद्य में लिखे गए हैं तथा ऐसे संस्करणों में लिखे गए हैं जो एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। प्रमुख ब्राह्मणों में शामिल हैं-ऐतरेय ब्राह्मण, पंचविंश ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि।
•ब्राह्मण ग्रंथों के उत्तरकालीन विकास के प्रतीक हैं अरण्यक ग्रंथ। ये ग्रंथ विशुद्ध रूप से विद्यापरक हैं। इनकी रचना वन (जंगल) में हुई थी।
वैदिक साहित्य में अरण्यकों का मुख्य महत्त्व यह है कि यह उपनिषदों की ओर एक स्वाभाविक संक्रमण है।
•उपनिषद् ऐसा साहित्य है जिसमें प्राचीन मनीषियों ने यह महसूस किया था कि अंतिम विश्लेषण में मनुष्य को स्वयं को पहचानना होता है।
उपनिषदों का केंद्रीभूत सिद्धांत है ब्रह्म तथा आत्मा एक है तथा ब्रह्म को छोड़कर बाकी सब मिला हुआ है।
•अरण्यक एवं उपनिषद आर्य जीवन की उस अवस्था को व्यक्त करते हैं जब लोग भौतिक जीवन के स्तर से ऊपर उठकर मनन एवं चिंतन के प्रति भी अपना रुझान दिखाने लगे थे।

वेदांग, सूत्र तथा स्मृति साहित्य

वेदों को सही ढंग से समझने के लिये वेदांगों की रचना हुई। इनकी संख्या कुल छः है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। ये सभी गद्य में लिखे गए हैं। कल्प का अर्थ है- कर्मकांड अर्थात् विधि, नियम। इसके तीन भाग हैं:

(i) श्रौत सूत्र (600 ई. पूर्व से 300 ई. पूर्व)

(ii) गृह्य सूत्र (600 ई. पूर्व से 300 ई. पूर्व)

(iii) धर्म सूत्र (500 ई. पूर्व से 200 ई. पूर्व)

धर्मसूत्र से सामाजिक व्यवस्था, जैसे- वर्णाश्रम, पुरुषार्थ आदि की जानकारी मिलती है। धर्मसूत्र के प्रणेता स्रोत आपस्तम्ब माने जाते हैं। प्रमुख सूत्रकार गौतम, आपस्तम्ब, बौधायन, वशिष्ठ, सांख्यायन, आश्वालायन आदि हैं, जिसमें गौतम का विशेष महत्त्व है।

क्षेत्र	रचयिता/विकास
शिक्षा	पाणिनी, कात्यायन
व्याकरण	अष्टाध्यायी (पाणिनी)
निरुक्त	(निघण्टु) यास्क
ज्योतिष	लगध, आर्यभट्ट, वराहमिहिर
छन्द	पिंगल
कल्प	गौतम, बौधायन, आपस्तम्ब

स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं। ये अधिकांशत: पद्य में लिखी गई हैं-
सूत्र एवं स्मृति साहित्य एक ऐसे समाज का चित्र उपस्थित करते हैं जहाँ विभाजन का आधार जन्म हो गया तथा समाज में जटिलता आ गई। यह स्थिति छठी ई. पू. के पश्चात् प्रकट हुई।

प्रमुख स्मृतियाँ	रचना काल
मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100 ई. पू. से 300 ई.
नारद स्मृति	300 ई. पू. से 400 ई.
पाराशर स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
बृहस्पति स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
कात्यायन स्मृति	400 ई. पू. से 600 ई.
देवल स्मृति	पूर्व मध्यकालीन

महाकाव्य पुराण एवं शास्त्रीय संस्कृत साहित्य

•महाकाव्य साहित्य के तौर पर वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण तथा वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत की गणना सर्वप्रमुख रूप से होती है।

•महाभारत एक स्वच्छंद कृति है जिसमें चार-चार पंक्तियों के एक लाख श्लोक हैं। रामायण का आकार इससे लगभग एक-चौथाई ही है।

•भगवद्गीता महाभारत का दार्शनिक विस्तार है जिसमें कर्म की प्रधानता तथा आत्मा की अमरता पर विशेष व्याख्यान दिया गया है।

•पुराण का शाब्दिक अर्थ है प्राचीन आख्यान, इसके संकलनकर्त्ता महर्षि लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं।

•पुराणों की संख्या 18 मानी जाती है। इनमें वायु पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण आदि प्रमुख हैं। इनमें मत्स्य पुराण (अथवा वायु पुराण) सबसे प्राचीन है।

•पुराण अपने वर्तमान रूप में संभवत: ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी में लिखे गए।

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि	ऐतरेय, कौषीतकि	आयुर्वेद
यजुर्वेद	शतपथ	कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद, मैत्रायणी उपनिषद्, ईशावास्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्	धनुर्वेद
सामवेद	ताण्ड्य जैमिनीय	छांदोग्य, जैमिनीय	गंधर्ववेद
अथर्ववेद	गोपथ	मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मांडुक्योपनिषद्	ब्रह्मवेद, शिल्पवेद

नाट्य ग्रंथ

भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का माना जाता है जो संस्कृत नाट्यशास्त्र का सबसे पुराना तथा प्रमाणिक ग्रंथ है।

इसमें अभिनय, नाट्यशाला, मंच संचालन, संगीत, छंदशास्त्र, अलंकार व रस आदि सभी का सांगोपांग प्रतिपादन किया गया है।

नाट्यशास्त्र को पंचमवेद भी कहा जाता है।

कालिदास, अश्वघोष, भास, शूद्रक, भवभूति, भटेनारायण, मुरारी तथा राजशेखर आदि प्रमुख नाटककार हैं।

शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' (चिकनी मिट्टी का ठेला) एक असाधारण नाटक है जिसमें निष्ठुर सत्यता के पुट देखने को मिलते हैं।

इसके पात्र समाज के सभी स्तरों से लिये गए हैं जिसमें चोर, जुआरी, दुर्जन तथा आलसी व्यक्ति, वेश्याएँ, पुलिस, भिक्षुक एवं राजनीतिज्ञ शामिल हैं।

घटनाओं की विविधता तथा द्रुत नाटकीय प्रभाव के कारण यह नाटक काफी प्रभावी बन गया है।

शिक्षाप्रद संस्कृत ग्रंथ

प्राचीन भारत में कुछ शिक्षाप्रद संस्कृत साहित्यों की रचना हुई, जैसे- पंचतंत्र, हितोपदेश आदि।

इसका उद्देश्य बालक राजकुमारों को राजनीतिक तथा व्यावहारिक मामलों की उपयोगी शिक्षा प्रदान करना था ताकि वे कहानियों के अंदर भरी गई लोकोक्तियाँ व हिन्दू नैतिकतापरक शिक्षा से अवगत हो सकें।

प्राचीन काल में चिकित्सा अथवा शल्य शास्त्र पर लिखे गए प्रारंभिक ग्रंथों में 'चरक संहिता', 'सुश्रुत संहिता' प्रमुख हैं। इनमें से पहला मेडिसिन तथा दूसरा सर्जरी पर आधारित ग्रंथ है। ये दोनों ही ग्रंथ ईसा की दूसरी शताब्दी में लिखे गए।

600 ई. में वाग्भट ने 'अष्टांगहृदय' की रचना की।

गणितीय विज्ञान के क्षेत्र में वैदिक ग्रंथ शुल्व सूत्र से ही लेखन का प्रारंभ हो जाता है। आगे आर्यभट्ट, वराहमिहिर आदि के ग्रंथों का नाम लिया जा सकता है।

भारतीय ज्योतिष तथा खगोल विज्ञान के संस्थापक आर्यभट्ट ने ही अपने ग्रंथ आर्यभट्टीयम् में सबसे पहले बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है।

छठी शताब्दी के महान ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर ने 'पंच सिद्धांतक' की रचना महाकाव्य शैली में की।

आगे सातवीं सदी में ब्रह्मगुप्त ने अपने 'ब्रह्मस्फुटिक सिद्धांतक' की रचना महाकाव्य शैली में की।

इस ज्योतिष परंपरा की अंतिम कड़ी भास्कराचार्य (12वीं सदी) हैं जिन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' नामक ग्रंथ की रचना की।

THANK YOU